पद २२६

(राग: यमन जिल्हा - ताल: त्रिताल)

रडे हा गोविंद राधे तुझ्या गृहा नेई गे।।धु.।। करितसे गवळ्या घरीं। दही दुधाची चोरी। खोड्या करी नानापरी। अंतिच नाहीं गे।।१।। याची खोडी किती वानूं। खेळायासी मागे भानू। मुखांत घालितां स्तनु। न समजे कांहीं गे।।२।। उचलुनी कडिये घेई। तुझ्या गृहाप्रति नेई। खाऊं घाली दूध दही। याला समजावी गे।।३।। उत्तरी यशोदा कडी। राधेवरी घाली उडी। माणिक प्रभुची गुणगोडी। निशिदिनि गाई गे।।४।।